<u>पुत्री के शीघ्र विवाह हेतु प्रयोग</u>

Mantra Prayoga for Marriage of a Girl

बच्चों के शीघ्र विवाह की कामना प्रत्येक माता-पिता की होती है। विशेषतः कन्याओं के विवाह की चिन्ता तो बनी ही रहती है। लड़कियों के विवाह में विलम्ब के अनेक कारण हो सकते हैं जिनमें मुख्यतः निम्नवत् हैं::-

- कभी-कभी कन्या को मंगल का दोबा होता है, जिस कारण उसका विवाह होता तो है, लेकिन देर से होता है।
- कन्या के जनमांक में लग्न-योग नहीं होता या फिर बहुत निर्बल होता है।
- कन्या के जन्मांक में काल-सर्प दोष अथवा अर्ध काल-सर्प दोष होता है।

ऐसी स्थितियों में उनका निवारण किसी योग्य पंडित से कराना चाहिए । लेकिन यदि किन्हीं अपरिहार्य कारणों से ऐसा ना कर सकें तो पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ निम्नलिखित उपायों में से कोई एक उपाय करें :

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)

<u>प्रयोग संख्याः-१</u>

मंत्रः- ॐ शं शंकराय सकल जन्मार्जित पाप विध्वंसनाय पुरूषार्थ चतुष्टय लाभाय च पतिं मे देहि कुरू-कुरू स्वाहा ।

विधानः- सर्व प्रथम अपने पूजन-स्थल में भगवान शिव और मां पार्वती जी के चित्र अथवा मूर्ति की

स्थापना करें। इसके बाद मिट्टी का एक कूंडा लेकर उसमें मिटटी भरें और केले का एक छोटा सा पौधा उसमें बो दें और उसे भगवान शिव और पार्वती के सामने रख दें । नित्य प्रति उसमें जल दें।अब उस पौधे को ११ बार सूत के कच्चे डोरे से लपेटकर उसका पूजन करें। तदोपरान्त कन्या उपरोक्त मंत्र की तीन माला जप करे। जप करने के बाद पौधे की १२ बार परिक्रमा करे। ऐसा करने से ग्रहों का कुप्रभाव भी नष्ट होगा और बांधाए भी नष्ट होंगी। जब तक परिणाम न मिले तब तक ऐसा ही करते रहें। भगवान शिव और मां पार्वती की कृपा से निश्चित ही सफलता प्राप्त होगी ।

प्रयोग–२

मंत्रः–

शरणागत–दीनार्त–परित्राण–परायणे !
सर्वस्यार्ति–हरे देवि! नारायणि नमोऽस्तु ते।।

यह प्रयोग २७ मंगलवार तक करना होता है। जिस कन्या के विवाह में निरन्तर बाधाएं आ रही हों, रिश्ते की बात बनते–बनते बिगड़ जाती हो या फिर अन्य कोई भी ऐसा कारण बन जाता हो तो कन्या को चाहिए कि वह इस प्रयोग को पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ करे। कन्या को चाहिए कि वह मंगलवार के दिन एक बार भोजन करे, गाय का दूध और फल

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)

ग्रहण करे और थोड़ा सा गुड़ और एक रोटी गाय को भी खिलाए।

विधान

मां दुर्गा के चित्र अथवा मूर्ति के सामने एक लकड़ी की चौकी रखें। लगभग १०० ग्राम चावल लेकर उनमें रोली मिलाकर, उन्हें उस चौकी पर रख दें। चावलों के ऊपर घी का दीपक रखकर जलाएं। इसके बाद दीपक की लौ पर ध्यान लगाकर कन्या उक्त मंत्र का १०८ बार जप करे। यह क्रिया प्रति मंगलवार को प्रातः काल में करनी होती है। जप आरम्भ करने से पहले कन्या को दुर्गा जी को तथा स्वयं को रोली, जिसे कुंकुम भी कहा जाता है, का टीका लगाना चाहिए। जप समाप्त होने के बाद जब दीपक बुझ जाये तो चौकी पर रखे गये चावलों को बाहर चबूतरे आदि पर डाल दें।

DR.RUPNATH(DR.RUPAK NATH)

प्रयोग काल में ही अथवा प्रयोग के उपरान्त कन्या के लिए निश्चित रूप से अच्छे घरों से रिश्ते आयेगें। यदि इसमें थोडा विलम्ब भी हो तो प्रयोग बन्द न करें। उचित समय आने पर समस्त कार्य अच्छे से सम्पन्न होगा ।

प्रयोग-३

भगवान शिव के अभिषेक के सम्बन्ध में सभी लोग जानते हैं कि यह कितना श्रेष्ठ विधान माना जाता है।

जिस प्रकार भगवान शिव अभिषेक से प्रसन्न होते हैं और इसका अनन्त फल प्राप्त होता है उसी प्रकार शीघ्र एवं श्रेष्ठ वर की प्राप्ति हेतु गणेश जी के तर्पण का विधान है जो इस प्रकार हैः-

सर्व प्रथम स्नानादि से निवृत होकर, एक अर्घ्य पात्र लेकर उसमें गंगाजल, सामान्य जल, चंदन-चूर्ण, गंध, केसर, सुगन्धित द्रव्य, अक्षत, दूर्वा एवं सुगन्धित पुष्प मिला दें। उसके उपरान्त किसी अन्य पात्र में गणेश जी का यंत्र अथवा मूर्ति स्थापित कर दें। फिर अपनी कामना व्यक्त करते हुए निम्नांकित मंत्र पढते हुए अर्घ्य पात्र में रखे गये जल से गणपति महाराज का तर्पण करेंः-

मंत्रः- ॐ श्रीं रति सहितं कामराजं तर्पयामि ।

यह प्रयोग शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथी से चतुर्दशी अर्थात 11 दिन तक प्रतिदिन १४४ बार किया जाता है।

वधु प्राप्ति हेतु लड़के भी इस प्रयोग को कर सकते हैं, लेकिन मंत्र में थोडा परिवर्तन हो जाता है, यथाः-

ॐ श्री कामराज सहितं रतिं तर्पयामि ।

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAKNATH)